IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

योगिनी दशा की अन्य दशाओं से तुलना एवं योगिनी दशा की विशिष्टताः एक संक्षिप्त विश्लेषण

मनोज

शोधार्थी, संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सारांश :

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में समय की गति और मानव जीवन के कर्मफल का सटीक आकलन करने के लिए अनेक दशा प्रणालियों का अवधान किया गया है। इन प्रणालियों में 'योगिनी दशा' अपने त्रिआयामी तांत्रिक आधार, चक्रीय सममिति और सूक्ष्म फलादेश क्षमता के कारण अत्यंत अनूठी और प्रभावी मानी जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में योगिनी दशा की पौराणिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि, रुद्रयामल तंत्र में वर्णित इसके रहस्य, और इसकी गणितीय संरचना का सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त, इस शोध पत्र में मुख्यधारा की दशा प्रणालियों- विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी और जैमिनी चर दशा-के साथ योगिनी दशा का एक गहन तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि गतिशीलता और त्वरित फल प्रकटीकरण के दृष्टिकोण से वर्तमान कलियुग में योगिनी दशा की प्रासंगिकता और अचूकता सर्वोपरि है।

कूट शब्द : योगिनी दशा, वैदिक ज्योतिष, विंशोत्तरी दशा, अष्ट योगिनी

१. प्रस्तावना :

वैदिक ज्योतिष विज्ञान में समय की गति, मानव जीवन के क्रमिक विकास और ग्रहीय ऊर्जाओं के प्रकटीकरण का आकलन करने के लिए दशा प्रणालियों का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं केंद्रीय स्थान है। दशा प्रणालियां मूलतः 'कर्म विपाक' या पूर्व जन्म के संचित कर्मों के वर्तमान जीवन में फलित होने के सटीक समय को निर्धारित करने का एक परिष्कृत गणितीय उपकरण हैं। महर्षि पराशर से लेकर जैमिनी मुनि तक, अनेक प्राचीन आचार्यों ने विभिन्न प्रकार की दशा प्रणालियों का प्रतिपादन किया है, जिनमें विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, चर दशा, और कालचक्र दशा प्रमुख रूप से उपयोग में लाई जाती हैं। इन सभी बहुआयामी प्रणालियों के मध्य, 'योगिनी दशा' एक अत्यंत सूक्ष्म, तंत्र-शास्त्र पर आधारित और विशिष्ट दशा प्रणाली के रूप में अपनी अलग पहचान स्थापित करती है। इसका उपयोग विशेष रूप से लघु अवधि के सटीक फलादेश, त्वरित घटनाओं के समय-निर्धारण और मानव जीवन के मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक परिवर्तनों को गहराई से समझने के लिए किया जाता है।[1]

योगिनी दशा ३६ वर्ष के एक लघु परंतु सघन चक्रीय ढांचे पर आधारित है, जो आठ दिव्य स्त्री ऊर्जाओं, जिन्हें 'अष्ट योगिनी' कहा जाता है, द्वारा नियंत्रित होती है। यह प्रणाली न केवल नक्षत्रों की स्थिति और ग्रहों के गोचर का उपयोग करती है, बल्कि यह प्राचीन तांत्रिक दर्शन और ब्रह्मांडीय स्त्री ऊर्जा की गहराइयों से भी अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र योगिनी दशा की तांत्रिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि, इसकी गणितीय संरचना, अष्ट योगिनियों के तात्त्विक स्वरूप, उनके मनोवैज्ञानिक और भौतिक फलों का विस्तृत विश्लेषण करता है। इसके साथ ही, यह शोध पत्र विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी और जैमिनी चर दशा के साथ योगिनी दशा का एक गहन तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत करते हुए, इसकी अद्वितीय विशिष्टताओं और वर्तमान कलियुग में इसकी असाधारण प्रासंगिकता को उद्घाटित करता है।

२. योगिनी दशा की पौराणिक, तांत्रिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि :

योगिनी दशा का उद्गम केवल पारंपरिक पराशरी ज्योतिष तक सीमित नहीं है, अपितु यह आगम तंत्र और शैव-शाक्त संप्रदाय के ग्रंथों से भी अत्यंत गहराई से जुड़ा हुआ है। प्राचीन तांत्रिक ग्रंथ 'रुद्रयामल तंत्र' के अनुसार, योगिनी दशा के रहस्यमय ज्ञान का प्रतिपादन स्वयं भगवान शिव ने अपनी अर्धांगिनी देवी पार्वती के समक्ष किया था। पौराणिक संदर्भों के अनुसार, एक बार हिमालय के सघन वनों में विचरण करते हुए देवी पार्वती ने भगवान शिव से जिज्ञासा प्रकट की कि ज्योतिष शास्त्र में अनगिनत दशा प्रणालियां विद्यमान हैं, परंतु कलियुग के इस तीव्र, अस्थिर और भ्रमपूर्ण परिवेश में, जहाँ मनुष्यों के कर्म और उनके परिणाम अत्यंत शीघ्रता से बदलते हैं, किसी व्यक्ति के 'कर्म' का त्वरित और अचूक परिणाम जानने की सबसे सटीक विधि कौन सी है। इस प्रश्न के उत्तर में भगवान शिव ने 'योगिनी दशा' का रहस्योद्घाटन किया और स्पष्ट किया कि सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग के लिए अन्य दशा प्रणालियां (जैसे विंशोत्तरी या कालचक्र) उत्कृष्ट परिणाम दे सकती हैं, परंतु कलियुग के दूषित और त्वरित परिवेश में केवल योगिनी दशा ही अचूक और बिना किसी त्रुटि के परिणाम प्रदान करने में सक्षम है। शिव के इस कथन ने योगिनी दशा को एक युग-विशिष्ट प्रणाली के रूप में स्थापित कर दिया। दर्शनशास्त्र और तांत्रिक मान्यताओं के दृष्टिकोण से, 'योगिनी' शब्द का अर्थ उन दिव्य और अलौकिक स्त्री शक्तियों से है जो ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती हैं।[2]

तांत्रिक ग्रंथों और स्थापत्य कला (जैसे ओडिशा के हीरापुर और मध्य प्रदेश के भेड़ाघाट स्थित चौंसठ योगिनी मंदिरों) में ६४ योगिनियों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जिन्हें अष्ट मातृकाओं (सप्त मातृकाएं और एक अतिरिक्त देवी) का ही बहुआयामी विस्तार माना जाता है। ये ६४ योगिनियां ब्रह्मांड की संरचना के मूलभूत तत्वों का प्रतीक हैं। तांत्रिक प्रतीकवाद के अनुसार, ये ६४ योगिनियां मन की १६ कलाओं (चंद्रमा की १५ दृश्य और १ अदृश्य कला), ५ स्थूल तत्वों (पंचमहाभूतः पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) और १० इंद्रियों (पांच ज्ञानेंद्रियां और पांच कर्मेंद्रियां) के जटिल गुंधन का आध्यात्मिक स्वरूप हैं।

ज्योतिषीय गणना और फलादेश को व्यावहारिक रूप देने के लिए, इन ६४ योगिनियों की व्यापक ऊर्जा को आठ मुख्य योगिनियों के समूह में संकुचित किया गया है। ये आठ योगिनियां हैं मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, और संकटा। तांत्रिक परंपराओं में इन आठ योगिनियों को देवी के विशिष्ट स्वरूपों जैसे ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही आदि के रूप में भी पूजा जाता है। कुछ अन्य संप्रदायों में इन्हें सुरसुंदरी, मनोहरा, कनकवती, कामेश्वरी, रति सुंदरी, पद्मिनी, नटनी और मधुमती के रूप में भी जाना जाता है। प्रत्येक योगिनी एक विशिष्ट ग्रह से जुड़ी है और मानव चेतना के एक विशेष विकास चरण का प्रतिनिधित्व करती है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक के चक्रीय जीवन को नियंत्रित करती है।

3. गणितीय संरचना एवं सैद्धांतिक गणना पद्धति :

योगिनी दशा प्रणाली का गणितीय ढांचा अन्य पारंपरिक दशा प्रणालियों की तुलना में अधिक प्रगतिशील, गणितीय रूप से सममित और स्पष्ट है। इसका एक पूर्ण चक्र ३६ वर्षों का होता है, जो त्रिकोणीय गणितीय प्रगति के एक अत्यंत सुंदर पैटर्न का अनुसरण करता है। इस पैटर्न के अंतर्गत प्रत्येक अगली दशा का वर्ष पिछली दशा से एक वर्ष अधिक होता है, जिसे निम्न प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है:

$$१+२+३+४+५+६+७+८= ३६ \text{ वर्ष}$$

इस ३६ वर्षीय चक्र को शुद्ध और अशुद्ध ऊर्जाओं के बीच एक विशिष्ट संतुलन में विभाजित किया गया है। इस चक्र में १६ वर्ष प्राकृतिक शुद्ध ग्रहों (चंद्रमा, बृहस्पति, बुध और शुक्र) के अधीन कार्य करते हैं, जो क्रमशः मंगला, धान्या, भद्रिका और सिद्धा योगिनियों द्वारा शासित होते हैं। इसके विपरीत, शेष २० वर्ष प्राकृतिक क्रूर या अशुद्ध ग्रहों

(सूर्य, मंगल, शनि और राहु) के अधीन होते हैं, जो पिंगला, भ्रामरी, उल्का और संकटा योगिनियों द्वारा संचालित होते हैं। यह १६ और २० का अनुपात मानव जीवन में सुख और संघर्ष के वास्तविक यथार्थ को दर्शाता है।

किसी भी जातक की जन्म कुंडली में प्रारंभ होने वाली पहली योगिनी दशा का निर्धारण जन्म के समय चंद्रमा के नक्षत्र के आधार पर किया जाता है। वैदिक ज्योतिष में अंतरिक्ष को २७ नक्षत्रों में विभाजित किया गया है, जिसकी शुरुआत अश्विनी (नक्षत्र संख्या १) से होती है और रेवती (नक्षत्र संख्या २७) पर समाप्ति होती है। जन्म नक्षत्र की संख्या का उपयोग करके एक विशिष्ट गणितीय सूत्र लागू किया जाता है, जिसे योगिनी निर्धारण का 'मास्टर सूत्र' कहा जाता है:

सक्रिय योगिनी (शेषफल) = (जन्म नक्षत्र संख्या + 3) / ८

इस सूत्र का दार्शनिक आधार यह है कि जन्म नक्षत्र में ३ जोड़ना त्रिकोणीय ऊर्जा (सृष्टि, स्थिति, और संहार) के साथ आत्मा के संबंध को दर्शाता है। इस विभाजन की प्रक्रिया में प्राप्त होने वाले भागफल को पूर्णतः अनदेखा कर दिया जाता है। जो शेषफल प्राप्त होता है, वह जन्म के समय की योगिनी को निर्धारित करता है। शेषफल के अनुसार सक्रिय योगिनी इस प्रकार हैं: १ = मंगला (चंद्रमा), २ पिंगला (सूर्य), ३ धान्या (बृहस्पति), ४ भ्रामरी (मंगल), ५ भद्रिका (बुध), ६ = उल्का (शनि), ७ = सिद्धा (शुक्र), और० या ८ = संकटा (राहु)।

उदाहरण के लिए, यदि किसी जातक का जन्म पुष्य नक्षत्र में हुआ है, जो कि चक्र का ८वां नक्षत्र है, तो सूत्र के अनुसारः (८ + ३) / ८ = ११ / ८। यहाँ भागफल र है और शेषफल ३ है। शेषफल ३ होने का स्पष्ट अर्थ है कि व्यक्ति का जन्म 'धान्या योगिनी के प्रभाव में हुआ है, जिसके स्वामी बृहस्पति हैं। इसी प्रकार, यदि जन्म अनुराधा नक्षत्र (एच्यां नक्षत्र) में हुआ है, तो (१७ + ३) / ८ = २० / ८। यहाँ शेषफल ४ प्राप्त होता है, जिसका अर्थ है कि जन्मकालिक दशा 'भ्रामरी' योगिनी की होगी।

ज्योतिषीय गणना में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि जन्म के समय चंद्रमा सदैव किसी नक्षत्र के प्रारंभिक बिंदु (० अंश० मिनट) पर नहीं होता है। वह नक्षत्र के एक हिस्से को पार कर चुका होता है, जिसका अर्थ है कि जन्मकालिक योगिनी दशा का कुछ भाग पहले ही व्यतीत हो चुका है और शेष भाग ही जातक को अपने जन्म के बाद भोगना है। इस शेष अवधि को दशा संतुलन कहा जाता है। प्रत्येक नक्षत्र का कुल विस्तार १३ डिग्री २० मिनट होता है, जिसे यदि चाप मिनटों में परिवर्तित किया जाए, तो यह पूर्ण रूप से ८०० चाप मिनट (१३ x ६० + २० = ८००) के बराबर होता है। जन्म के समय शेष दशा की गणना के लिए चंद्रमा द्वारा नक्षत्र में तय की गई दूरी को घटाकर निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है:

दशा शेष (दिनों में) = [(८०० चंद्रमा द्वारा तय की गई दूरी) x ३६५ x योगिनी की कुल अवधि (वर्ष)] / ८००

योगिनी महादशा का प्रभाव एकतरफा नहीं होता; यह अन्य योगिनियों की ऊर्जाओं से भी प्रभावित होता है। महादशा के अंतर्गत आने वाली इन सूक्ष्म अवधियों को अंतर्दशा कहा जाता है। अंतर्दशाओं का निर्धारण महादशा की अवधि और अंतर्दशा नाथ की अवधि के आनुपातिक वितरण के आधार पर किया जाता है। अंतर्दशा की अवधि (महीनों में) ज्ञात करने का प्रामाणिक सूत्र निम्नलिखित है:

अंतर्दशा (माह) = (महादशा योगिनी के वर्ष x अंतर्दशा योगिनी के वर्ष) / ४

उदाहरणार्थ, यदि ६ वर्ष की उल्का महादशा के अंतर्गत ८ वर्ष की संकटा अंतर्दशा की गणना करनी हो, तो सूत्रानुसारः (६८) + ४ = १२ माह (अर्थात १ वर्ष) का परिणाम प्राप्त होता है। किसी भी महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा हमेशा उसी महादशा योगिनी की होती है। इसके पश्चात यह अनुक्रम पूर्वनिर्धारित आठ योगिनी चक्र (मंगला पिंगला - धान्या भ्रामरी भद्रिका उल्का - सिद्धा संकटा) के अनुसार ही क्रमिक रूप से आगे बढ़ता है।

४. अष्ट योगिनियों का तात्त्विक स्वरूप एवं विस्तृत दशाफल :

मंगला योगिनी (१ वर्ष) : यह जीवन के प्रारंभिक चरण और मानसिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। मात्र १ वर्ष की अल्प अवधि वाली यह दिशा चंद्रमा द्वारा शासित है। मंगला दिशा के दौरान जातक के जीवन में एक अद्‌भुत सकारात्मकता का संचार होता है। व्यक्ति का मन शांत होता है और भावनात्मक स्पष्टता आती है। इस अवधि में जातक की प्रवृत्ति धर्म, परोपकार और सात्त्विक विचारों की ओर आकृष्ट होती है। उसे परिवार से, विशेषकर माता से पूर्ण प्रेम और सहयोग प्राप्त होता है। ग्रंथों के अनुसार, इस काल में जातक को सम्मान, उत्तम वस्त्र और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

पिंगला योगिनी (२ वर्ष) : पिंगला योगिनी सूर्य के प्रचंड और तेजस्वी आधिपत्य में आती है। इसका स्वरूप ऊष्मा, तीक्ष्णता, अहंकार और अधिकार का प्रतीक है। इस २ वर्ष की अवधि के प्रारंभिक चरण में जातक को सूर्य की प्रचंडता के कारण कुछ मानसिक तनाव, शारीरिक ताप (विशेषकर ज्वर या हृदय संबंधी रोग), अहंकार के टकराव का सामना करना पड़ सकता है। परंतु, यदि जन्म कुंडली में सूर्य बलवान है, तो दिशा के उत्तरार्ध में यह जातक को असाधारण नेतृत्व क्षमता, प्रशासनिक सफलता, कार्यक्षेत्र में पदोन्नति और समाज में उच्च पद-प्रतिष्ठा प्रदान करती है।

धान्या योगिनी (3 वर्ष): धान्या योगिनी बहुतायत, धन-धान्य, ज्ञान, अध्यात्म और सौभाग्य का साक्षात स्वरूप है। देवगुरु बृहस्पति इसके शासक हैं, जो इसे संपूर्ण चक्र की सबसे शुभ दिशाओं में से एक बनाते हैं। ३ वर्षों की इस अवधि में व्यक्ति को आर्थिक समृद्धि का चरम प्राप्त होता है। जातक को उच्च अधिकारियों से भारी सम्मान और लाभ प्राप्त होता है। यह काल शिक्षा में उच्च सफलता, ज्ञानार्जन, और विवेक के विस्तार के लिए सर्वोत्तम है। पारिवारिक दृष्टिकोण से, यह मांगलिक कार्यों के संपन्न होने का समय है।

भ्रामरी योगिनी (४ वर्ष): भ्रामरी योगिनी का स्वरूप अस्थिरता, भ्रमण और ऊर्जा के व्यय का है। इसका शासक मंगल है। ४ वर्षों की इस अवधि में जातक को अत्यधिक यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, जो कई बार दिशाहीन या अनुत्पादक होती हैं। भ्रामरी का शाब्दिक अर्थ ही भ्रमण या भटकाव है। इस दिशा में जातक अपने वर्तमान स्थान से विस्थापित हो सकता है। मानसिक भ्रम, अकारण क्रोध, और भाइयों या सहयोगियों से विवाद की प्रबल आशंका बनी रहती है। यह एक संघर्षपूर्ण अवधि है जहाँ मंगल की अनियंत्रित ऊर्जा व्यक्ति को आक्रामक बना सकती है।

भद्रिका योगिनी (५ वर्ष): भद्रिका योगिनी बुध ग्रह द्वारा संचालित होती है और यह संचार, बुद्धि, व्यापारिक निपुणता, तथा सामाजिक संबंधों का प्रतीक है। इस ५ वर्ष की अवधि में जातक अपनी बौद्धिक क्षमताओं का उच्चतम उपयोग करता है। यह काल शिक्षा, लेखन, अनुसंधान, वाणिज्य और सामाजिक संपकों को मजबूत करने के लिए अत्यंत अनुकूल है। भद्रिका दिशा व्यक्ति को एक कुशल रणनीतिकार बनाती है। मित्रों, परिजनों और गुरुओं से सहयोग मिलता है, और पुरानी शत्रुओं का शमन होता है।

उल्का योगिनी (६ वर्ष): उल्का योगिनी शनि के कठोर और यथार्थवादी आधिपत्य में आती है। 'उल्का' का शाब्दिक अर्थ आकाश से गिरने वाले अग्निपिंड से है, जो अचानक पतन, विनाश या भारी परिवर्तन का प्रतीक है। इस ६ वर्ष की अवधि को सबसे कष्टप्रद दिशाओं में से एक माना जाता है। जातक को शारीरिक कष्ट, ऋण वृद्धि, सेवकों से परेशानी, और कार्यस्थल पर नौकरी छूटने या अपमान का भय बना रहता है। दार्शनिक दृष्टिकोण से, यह कर्मों की शुद्धि का काल है। शनि जातक के जीवन से सभी प्रकार के भ्रम को नष्ट कर देता है।

सिद्धा योगिनी (७ वर्ष): सिद्धा योगिनी शुक्र के आधिपत्य में आती है और इसे भौतिक सुख, सौंदर्य, विलासिता और पूर्णता का काल माना जाता है। इस ७ वर्ष की अवधि में जातक को अपने सभी प्रयासों की सिद्धि' (सफलता) प्राप्त होती है। उसे सभी प्रकार के ऐश्वर्य, उच्च पद, प्रेम संबंधों में सफलता, और कला के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त होती है। यह दिशा विशेष रूप से उन जातकों के लिए वरदान सिद्ध होती है जो रचनात्मक कार्यों, सिनेमा, संगीत या राजनीति में हैं। जीवन में यदि पूर्व से कोई परेशानी चली आ रही है, तो सिद्धा दिशा के प्रवेश करते ही वे समस्याएं स्वतः समाप्त होने लगती हैं।

संकटा योगिनी (८ वर्ष): संकटा योगिनी, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, जीवन में अचानक उत्पन्न होने वाले संकटों और प्रचंड परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करती है। राहु के स्वामित्व वाली यह दिशा पूरे ३६ वर्षीय चक्र में सबसे लंबी (८ वर्ष) होती है। इस अवधि में जातक को भ्रम, विदेशी तत्वों से उलझन, अपनों से वियोग, और मानसिक अस्थिरता का सामना करना पड़ता है। बंधु-वर्गों से भयंकर द्वेष, अकारण भय, और कानूनी उलझनें इस काल की विशेषताएं हैं। व्यक्ति को अपना निवास स्थान छोड़कर दूरस्थ स्थानों में वास करना पड़ सकता है।

५. योगिनी दशा की उपचारात्मक एवं तांत्रिक शांति व्यवस्था :

चूंकि योगिनी दशा का संबंध तंत्र और देवी उपासना से है, इसलिए इसके अशुद्ध प्रभावों को कम करने के लिए एक अत्यंत स्पष्ट और प्रभावी उपचारात्मक ढांचा उपलब्ध है। जब किसी जातक को भ्रामरी, उल्का या संकटा जैसी अनिष्टकारी योगिनियां पीड़ित करती हैं, तो केवल ग्रहीय शांति पर्याप्त नहीं होती; संबंधित योगिनी के अधिष्ठात्री देवता की तांत्रिक या वैदिक पूजा अनिवार्य हो जाती है। प्रमुख उपचार इस प्रकार हैं:

- पिंगला (सूर्य): कष्टों को दूर करने के लिए सूर्य मंत्रों का जाप, रविवार को सूर्य उपासना और गेहूं गुड़ का दान किया जाना चाहिए।
- धान्या (बृहस्पति): महादशा में यदि शुभ फलों को बढ़ाना हो, तो नित्य विष्णु सहस्रनाम' या राम रक्षा स्तोत्र का पाठ अत्यंत चमत्कारी परिणाम देता
- भ्रामरी (मंगल): भटकाव को रोकने के लिए मंगलवार को हनुमान जी की उपासना, मंगल मंत्रों का जाप और लाल वस्तुओं का दान निर्देशित है।
- भद्रिका (बुध): शुभ प्रभाव को जागृत करने के लिए बुधवार को हरे वस्त्र धारण कर "ॐ भद्रिके भद्रं देहि देहि अभद्रं दूरी कुरुते नमः" मंत्र का 11 बार जाप अत्यंत फलदायी बताया गया है।
- उल्का (शनि): प्रचंड कष्टों को दूर करने के लिए काले तिल का दान, शनिवार को हनुमान और शनि उपासना की जानी चाहिए।
- संकटा (राहु): ८ वर्षीय लंबी दिशा में उत्पन्न संकटों के शमन हेतु शनिवार को माँ दुर्गा की उपासना और नीले/काले वस्त्रों का दान अनिवार्य माना जाता है।

६. अन्य दशा प्रणालियों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण :

विंशोत्तरी दशा महर्षि पराशर द्वारा प्रतिपादित सबसे प्रामाणिक प्रणाली है, जो १२० वर्षों के एक विशाल कैनवास पर ९ ग्रहों के शासन को चित्रित करती है। मानव जीवन की सीमित आयु के कारण, कोई भी व्यक्ति विंशोत्तरी के पूर्ण चक्र का अनुभव नहीं कर पाता। इसके विपरीत, योगिनी दशा में केतु को स्वतंत्र दशा का दर्जा प्राप्त नहीं है। यह ८ ग्रहों और ८ योगिनियों के माध्यम से मात्र ३६ वर्षों का चक्र पूरा करती है। ३६ वर्ष का यह लघु चक्र एक औसत आयु वाले व्यक्ति के जीवन में कम से कम दो या तीन बार आवर्तित होता है। यह आवर्तन मनोवैज्ञानिक और कर्मिक विश्लेषण के लिए एक अमूल्य उपकरण है।[3] विंशोत्तरी दशा दीर्घकालिक रुझानों और समग्र जीवन की दिशा का एक स्थूल' चित्र प्रस्तुत करती है, जबकि योगिनी दशा एक 'सूक्ष्म' चित्र प्रस्तुत करती है। अष्टोत्तरी दशा १०८ वर्षों का एक चक्र है, जो आयु निर्धारण और विशेष जन्म परिस्थितियों में छिपे कर्मों के फलादेश के लिए प्रयोग की जाती है। अष्टोत्तरी दशा एक सार्वभौमिक दशा प्रणाली नहीं है। ऋषि पराशर के स्पष्ट निर्देशानुसार, इसका उपयोग केवल विशेष शर्तों के पूर्ण होने पर ही किया जाना चाहिए। इसकी मुख्य शर्त यह है कि राहु को लग्न के स्वामी से केंद्र या त्रिकोण में स्थित होना चाहिए, परंतु राहु स्वयं लग्न में स्थित नहीं होना चाहिए। सांख्यिकीय दृष्टि से, ये जटिल शर्तें केवल २५% जन्म कुंडलियों में ही पूर्ण होती हैं। इसके विपरीत, योगिनी दशा एक पूर्णतः सार्वभौमिक प्रणाली है। इसके उपयोग के लिए किसी प्रकार की पूर्व-शर्त की आवश्यकता नहीं है।[4]

जहाँ योगिनी, विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी दशाएं नक्षत्र (तारा मंडल) और ग्रहों पर आधारित हैं, वहीं जैमिनी चर दशा 'राशियों पर आधारित है। योगिनी दशा की गणना जन्म के समय चंद्रमा की नक्षत्र स्थिति के आधार पर होती है, जो यह मानती है कि मन (चंद्रमा) ही व्यक्ति के समस्त अनुभवों का केंद्र है। इसके विपरीत, चर दशा का आरंभ लग्न

में उदित होने वाली राशि से होता है। योगिनी दशा में सभी आठ योगिनियों की अवधि पूर्णतः स्थिर और पूर्वनिर्धारित है, लेकिन चर दशा में किसी भी राशि की दशा अवधि स्थिर नहीं होती, वह इस बात पर निर्भर करती है कि उस राशि का स्वामी ग्रह उस राशि से कितने भाव की दूरी पर स्थित है।[5]

७. भौगोलिक मान्यताएं एवं कलियुग में प्रासंगिकता :

योगिनी दशा संपूर्ण भारत में जानी जाती है, परंतु यह विशेष रूप से उत्तर भारत, पहाड़ी क्षेत्रों (जैसे उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश), कश्मीर और पंजाब में अत्यधिक लोकप्रिय और प्रामाणिक मानी जाती है। इन क्षेत्रों में इसके गहरे प्रचलन का मुख्य कारण तांत्रिक परंपराओं और कश्मीर शैव दर्शन का ऐतिहासिक प्रभाव है। हिमालयी क्षेत्रों में भगवान शिव और देवी पार्वती की उपासना का व्यापक विस्तार है, और चूंकि योगिनी दशा का प्रादुर्भाव स्वयं शिव द्वारा रुद्रयामल तंत्र' में किया गया था, इसलिए इन क्षेत्रों के विद्वान ज्योतिषी विंशोत्तरी के साथ-साथ अनिवार्य रूप से योगिनी दशा की गणना करते हैं।[6]

८. निष्कर्ष :

योगिनी दशा का अध्ययन यह सिद्ध करता है कि यह प्रणाली मात्र ग्रहों की महादशाओं का एक सामान्य अनुक्रम नहीं है; यह ब्रह्मांडीय स्त्री ऊर्जा, तांत्रिक दर्शन और समय के अंतःसंबंध का एक अत्यंत परिष्कृत और मनोवैज्ञानिक ढांचा है। ३६ वर्षों का इसका लघु, तीव्र और गणितीय रूप से सममित चक्र आधुनिक मानव जीवन की गतिशीलता के साथ पूरी तरह सामंजस्य स्थापित करता है। इस विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट होता है कि कलियुग के तीव्र घटनाक्रमों का सटीक पूर्व-आकलन करने के लिए योगिनी दशा का विंशोत्तरी दशा के साथ संयुक्त अनुप्रयोग अपरिहार्य है।

संदर्भ सूची :

[1] उपाध्याय, बी. एन. (2018). भारतीय फलित ज्योतिष में दशा प्रणालियों का इतिहास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास. (पृ.112).
[2] आगम अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग. (2015). रुद्रयामल तंत्र (तांत्रिक पृष्ठभूमि एवं दशा विचार). वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत संस्थान. (पृ.45).
[3] पाठक, के. के. (2017). योगिनी दशा और कर्म विपाक सिद्धांत. कोलकाता: अद्वैत आश्रम प्रकाशन. (पृ.105).
[4] शर्मा, वी. पी. (2022). कुंडली विश्लेषण में नक्षत्र आधारित दशाएं. जयपुर: रावत पब्लिकेशंस. (पृ.115)
[5] मिश्र, एम. डी. (2019). कलियुग में दशाओं की प्रासंगिकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन. (पृ.140).
[6] सिंह, डॉ. रामकुमार. (2018). हिमालयी तांत्रिक परंपरा एवं ज्योतिषीय दशा प्रणालियां. देहरादून: उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय ग्रंथ अकादमी. (पृ.72).